Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 1, October-2017, ISSN 2230-7540

झुन्झुनूँ जिले में जल संसाधन की स्थिति

Rekha Bai*

Research Scholar, Singhania University, Pacheri Bari, Rajasthan

सारांश – झुन्झुनूँ जिले के लिए जल की आज एक गंभीर समस्या है। आज संपूर्ण झुन्झनूँ जिले का जलस्तर काफी नीचे चला जा रहा है जो कि एक गंभीर समस्या है तथा आने वाले समय के लिए एक अच्छा संकेत नहीं है। जल के लगातार गिरते स्मर के कारण झुन्झुनूँ जिले में कृषि की पैदावार में गिरावट आ रही ळें आज जल की कमी के कारण किसान अपना कृषि कार्य छोडकर किसी दूसरे रोजगार की तलाश में शहरों की तरफ जा रहे हैं।

---------------------------------X---------------------------------

प्रस्तावना

झुन्झुनूँ में आठ जोन हैं जिसमें की एक मात्र जोन अलसीसर को छोड़कर सभी को डार्क जोन में शामिल किया गया है।

आठ जोन इस प्रकार हैं –

(1) झुन्झुनूँ

(2) उदयपुरवाटी

(3) नवलगढ़

(4) खेतड़ी

(5) बुहाना

(6) अलसीसर

(7) सूरजगढ़

(8) पिलानी

दूसरा यहाँ के लोगों ने अत्याधुनिक मशीनों के द्वारा पृथ्वी के काफी गहरे तक से पानी का दोहर कर जलस्तर को गिरा दिया है। अगर हम देखें तो लगता है कि ट्यूबवैलों के द्वारा धरती के हृदय पर घाव हो गये हैं।

आज जब क्षेत्र को डार्क जोन घोषित करने के बाद भी क्षेत्र में ट्यूबवैल लगवाये जा रहे हैं इसका कारण विभाग के अधिकारी अपने स्वार्थ के कारण रात के अंधेरे में ऐसे कार्य करवाते हैं।

जिले में डार्क जोन क्षेत्र

1. **नवलगढ़ जोन**: झुन्झुनूँ जिले से 50 किमी की दूरी पर स्थित है। यह ऐतिहासिक व पर्यटन की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण क्षेत्र है यहाँ शीत ऋतु में प्राचीन हवेलियों को देखने विदेशी पर्यटक आते हैं।

पहले इस क्षेत्र में पानी की कोई कमी नहीं थी पर यह क्षेत्र आज पानी की समस्या से जूझ रहा है। यहाँ प्राचीन कुऐं व बावड़ियों में पानी सूख चुका है जिसकी वजह से यहाँ कृषि कार्य में बड़ी मात्रा में कमी महसूस की गई है।

यहाँ के कुछ गाँव तो पानी की समस्या से बुरी तरह त्रस्त हैं। यहाँ का जलस्तर 140 से 150 मीटर के आसपास है। जैसे – चिराणा, टोडपुरा, बसावा, झाझड़, टोंक टीलरी, गोल्याणा, बाणी, बारवा, खिरोड, कारी, बेरी आदि गाँव तो पीने के पानी के लिए बड़ी मुश्किलों का सामना कर रहे हैं।

कुछ गाँव ऐसे हैं जहां पानी का स्तर अब तक तो ठीक है पर लगातार हो रही गिरावट का असर आने वाले कुछ वर्षों में देखने को मिल सकता है जैसे नवलगढ़ शहर, जाखल, परशरामपुरा, इन्द्रपुरा, बिरोल, टोडी, दुडीयां आदि गाँव।

2. **खेतड़ी जोन** : इस जोन में पानी की समस्या एक गम्भीर रूप ले चुकी है। इस क्षेत्र का जल स्तर लगातार गिरता जा रहा है जो कि एक गंभीर चिन्ता का विषय है। यहाँ हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड का उपक्रम है जिसके लिए पानी की प्राप्ति भी एक समस्या है तथा पानी का प्रदूषण भी एक समस्या बना हुआ है।

यहाँ का जलस्तर 120 मीटर के आसपास है यहाँ सिंचाई के लिए पानी की समस्या लगातार बनी रहती है जिसके कारण यहाँ कषि कार्य बहुत कम पैमाने पर किया जाता है। यहाँ के जल में फ्लोराइड की मात्रा अधिक होने के कारण यहाँ पर लोगों पर इसका प्रभाव देखा जा सकता है।

3. **झुन्झुनूँ जोन** : झुन्झुनूँ शहर की डार्क जोन में शामिल है यहाँ भी पानी का जल स्तर काफी गहरा है तथा लगातार गिरता जा रहा है। यहाँ प्राचीन जलाशयों, कुओं, बावड़ियों की अधिक संख्या होने के बाद भी यहाँ जल संरक्षण का कोई अनुचित प्रबन्ध नहीं है। वर्षा के दिनों में पानी रास्तों में भर जाता है पर थोड़े समय के बाद ही पानी की गंभीर समस्या बन जाती है। यहाँ का जलस्तर कुछ गाँवों में तो ऊपर है और कुछ गाँवों में काफी नीचे जा चुका है।

उदावास, पंचदेव, बड़ागाँव, झुन्झुनूँ शहर, बजावा, चारावास आदि गाँवों में तो पानी का स्तर 110 मीटर तक है पर कुछ गाँवों में पानी का स्तर काफी नीचे जा चुका है जहां पानी के लेवल 130 मीटर के आसपास है जैसे चनाणा, खोजास, जोधपुरा, हरिपुरा आदि।

जल में फ्लोराइड की मात्रा 6.5पी.एच. के आसपास है क्षेत्र में गर्मियों में पानी की गंभीर समस्या बन जाती है।

यहाँ जलदायक विभाग का जिला मुख्या होने के कारण यहाँ जलदायक विभाग के उच्च अधिकारी बैठते हैं तथा संपूर्ण जिले की पीन की समस्याओं को सुलझाते हैं।

यहाँ आने वाले विदेशी पर्यटकों को यहाँ आने वाली समस्याओं के कारण इनकी संख्या में कमी होती जा रही है।

यहाँ हैण्डपम्पों की संख्या विभाग के अनुसार 3000 से ऊपर ही है, ट्यूबवैलों की संख्या 2000 के आसपास है।

झुन्झुनूँ ने नहर लाने के प्रयास पिछले 50 वर्षों से किये जा रहे हैं अगर इस क्षेत्र में नहर का पानी आ जाता है तो इस क्षेत्र की कायापलट हो जायेगी।

4. **बुहाना जोन**: इस क्षेत्र को भी डार्क जोन में शामिल किया गया है।

बुहाना झुन्झुनूँ से 45 किमी की दूरी पर है यहाँ भी पानी का जलस्तर लगातार गिर रहा है। यहाँ फ्लोराइड की मात्रा 5 चभ् से ऊपर ही है। बुहाना गाँव की ढाणियों में पानी की गंभीर समस्या बनी हुई है। किसानों के द्वारा अपनी भूमि को छोड़कर जाना तथा दूसरे गाँव में ठेके पर खेती करना मजबूरी हो गया है। यहाँ के कुछ क्षेत्रों में तो जल का स्तर 160 से 165 मीटर के आसपास है तथा कुछ क्षेत्रों में 120 से 130 मीटर के आसपास है। जैसे घसेड़ा, छऊ, मेड़तिया, नोहरा, जमात आदि गाँव है। ग्रीष्म ऋतु में यहाँ पानी की समस्या बड़ी विकट हो जाती है जहां पानी का वितरण टैंकरों के द्वारा किया जाता है।

लोगों ने पानी के संरक्षण के लिए वाटर टैंक बनाये हैं जहां वर्षा का पानी संरक्षित किया जाता है।

5. **चिड़ावा जोन** : यह भी एक डार्क जोन क्षेत्र है।

चिड़ावा एक ऐतिहासिक शहर है यहाँ नरहड़ में लगने वाला उर्स अपने आप में अनोखा है। इस क्षेत्र में प्रति वर्ष हजारों की संख्या में विदेशी पर्यटक आते हैं। इस क्षेत्र में आज पानी की गंभीर समस्या छाई हुई है। पानी का स्तर लगातार गिरता जा रहा है जो कि एक चिन्ता का विषय है। कृषि कार्य पानी की कमी के कारण लगभग पूरे क्षेत्र में न के बराबर होता है। क्षेत्र में प्राचीन पानी के स्रोत अब सूख चुके हैं तथा आधुनिक युग में इनकी उपयोगिता को धत्ता बता दिया गया है जो कि एक चिन्ता का विषय है।

चिड़ावा क्षेत्र में पानी की सप्लाई दूर से की जाती है तथा गाँवों के लोग पानी दूर दूर से लेकर आते हैं।

जल में फ्लोराइड की मात्रा है जिसका असर लोगों पर देखा जाता है। पानी के लिए लड़ाई, झगड़े होना आम बात है तथा धरने प्रदर्शन, अधिकारियों से बदसलूकी की घटनाऐं आम बात हो गई हैं।

खेतीहर किसान कृषि कार्य छोड़कर दूसरे रोजगार को अपनाने लगे हैं जिसके कारण वर्ष में केवल एक फसल सिर्फ बाजरा ही पैदा की जाती है जिसके कारण कृषि पैदावार में काफी गिरावट आयी है।

यहाँ के हैण्डपम्परों व ट्यूबवैलों का पानी भी गर्मियों में सूख जाता है। इस क्षेत्र में पानी की समस्या के लिए घर घर में वाटर टैंक बनाये गये हैं वे हैं गुढ़ा, बालास, धनावता, नांगल, कोट, बागोरा, पोषाणा, गुडा, किशोरपुरा, कांकरिया, चौफुल्यसा, दीपपुरा आदि गाँव हैं।

इस क्षेत्र में अगर कुओं व हैंडपंपों के द्वारा पानी का उपयोग किया जाता है तथा सिंचाई के लिए अब तक तो पानी पर्याप्त है। इस क्षेत्र में 2500 के लगभग हैण्डपंप हैं तथा 700 के आसपास ट्यूबवैल हैं। कुओं की संख्या पहले तेजी से बढ़ रही थी पर अब इसकी संख्या में कमी आ रही है।

जल में फ्लोराइड की मात्रा 6 चभ् के बराबर हैं। यहाँ के लोग फ्लोराइड युक्त पानी पीने के कारण फ्लोराइड का शिकार हो रहे हैं। सरकार ने फ्लोराइड के उपचार के लिए पानी में मिलाने वाली कुछ दवाईयां पिछले दिनों वितरित की हैं।

उदयपुरवाटी क्षेत्र

यह क्षेत्र झुन्झुनूँ से 50 किमी व सीकर से 40 किमी की दूरी पर है।

इस क्षेत्र को भी डार्क जोन में शामिल किया गया है। इस क्षेत्र का भी जलस्तर लगातार गिरता जा रहा है। जिसके कारण यहाँ पीने के पानी की गंभीर समस्या बनती जा रही है। इस क्षेत्र का जलस्तर 160 मीटर के लगभग है जो कि लगातार गिरता जा रहा है।

यहाँ कुछ गाँव ऐसे भी हैं जहां का जलस्तर 200 मीटर के आसपास पहुँच गया है जैसे छापौली, मंडावरा, घाट, गिरावडी, नीम का जोहड़ा, मणकसास, पचलंगी, पापड़ा, अढ़वाना, आदि गाँव पानी की गंभीर समस्या का सामना कर रहे हैं।

ऐसे गाँव जिनका जलस्तर अब तक तो यानी 120 मीटर के आसपास है।

सूरजगढ़ क्षेत्र:

इस क्षेत्र में पानी की गंभीर समस्या लगातार बनी रहती है। यहाँ गाँवों व ढाणियों में लोग पानी के लिए रात रात भर हैण्डपम्परों व कुओं पर कतार में बैठे रहते हैं। विभाग के द्वारा आपातकालीन सुविधाओं के लिए टैंकरों से जल का वितरण किया जाता है। यहाँ भी कृषि कार्य लगातार कम होता जा रहा है। किसान अपना कृषि कार्य छोड़कर दूसरा कार्य अपना रहे हैं।

फ्लोराइड की मात्रा 6पी.एच. के लगभग है। यहाँ प्राचीन जल के स्रोतों की उचित रूप में देखभाल नहीं की गई जिसके कारण इन स्रोतों की दयनीय दशा हो गई है। वर्षा के जल

www.ignited.in

संरक्षण के लिए घर घर में वाटर टैंक बनाये गयें हैं। जब कभी अच्छी वर्षा हो जाती है तो वर्षा का स्तर थोड़ा बहुत सुधर जाता है पर कभी–कभी वर्षा न होने की दशा में यहाँ पानी की समस्या बहुत ही विकट हो जाती है। कुछ गाँव व ढाणियों का जल का स्तर 140 से 160 मीटर तक पहुँच गया है जैसे देवगढ़, रामपुरा, रंगपुरा, सांकड़ा आदि गाँव हैं। कुछ गाँवों का जल स्तर 110 से 120 मीटर तक पहुँच गया है। जैसेक लालपुर, रघुपुरा, पाटनी, लाडपुरा आदि।

संदर्भ

[http://water.usgs.gov/edu/earthwherewater.html Where is Earth's Water (पृथ्वी पर जल का वितरण (यू.एस.भूविज्ञान सर्वेक्षण)

विश्व की जल 2006–2007 सारणी पैसिफिक संस्थान

विश्व के जलः मीठे जल संसाधनों की द्विवर्षीय रिपोर्ट (आईलैंड प्रेस, वॉशिंगटन डीसी)

संयुक्त राष्ट्र की भविष्यवाणी है कि सं 2050 तक विश्व जनसंख्या 9.1 अरब हो जायेगी।

डॉ. आशा नारायण राय – जल अधिकार का वैकल्पिक संसार (इण्डिया वाटर पोर्टल) दैनिक भास्कर, 9 नवम्बर 2010

जलमंडल – इण्डिया वाटर पोर्टल

WBCSD पानी तथ्यों और रूझाान

Corresponding Author

Rekha Bai*

Research Scholar, Singhania University, Pacheri Bari, Rajasthan

E-Mail – ashokkumarpksd@gmail.com